International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.1 Sept-Oct 2024

मृणाल पांडे के 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन में बढती मूल्यहीनता

डॉ. हेमलता काटे
हिंदी विभाग, बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण
Corresponding Author- डॉ. हेमलता काटे
Email: hematakate@yahoo.in
DOI- 10.5281/zenodo.14202730

शोध सार

आज महानगरीय जीवन मूल्यहीनता का जड बनता जा रहा है| यहां न किसी को किसी के भावनाओं की कदर है और न भावनाओं का एहसास है| बस आलिशान जीवन जीने के लिए इन्सान पैसों के पीछे भाग रहा है| गांव में रहनेवाला व्यक्ति भी यहां आकर अपनी संस्कृति भूल जाता है| एक तो आर्थिक विषमता के कारण महानगर अमीरी और गरीबी के बीच बटकर रह गया है| जिसके चलते महानगर में अमीरों की जीवनशैली और गरीबों की जीवन शैली में काफी अन्तर आ गया है| परंतु मृणाल पांडे जी ने अपने उपन्यासों विशेषत: गरीबी से अमीर बने व्यक्ति के मूल्यों में किसतरह बदलाव होता है इसपर प्रकाश डाला है और महानगरीय जीवन में बढती मूल्यहीनता पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं| गांव से आया व्यक्ति महानगर में आने के बाद जब बडा बन जाता है तब उसे अपने रिश्ते पिछडे लगने लगते| केवल रिश्ते ही नहीं तो अपनी मातृभाषा भी उसे पिछडी लगती है| कारण वह पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग जाता है| महानगरीय जीवन में बढती इस मूल्यहीनता पर मृणाल पांडे जी ने 'रास्तों पर भटकते हुए' इस उपन्यास में यथार्थ रूप में चित्रण किया है|

बीज शब्द: मूल्यहीनता, महानगर, पार्टी संस्कृति, अमानवीयकरण आदि |

शोधा लेख

महानगर एक ऐसा शहर होता है, जहां रोजगार की उपलब्धियां अधिक मात्रा होती है साथ में यहां की चकाचौंद जिंदगी गांव के लिए आकर्षण होती है| अत: गांव में आर्थिक विवंचना से ग्रस्त व्यक्ति महानगर की ओर दौड आता है| परिणामस्वरूप महानगर की जनसंख्या बढती जाती हैं| इस दृष्टि से भी यह शहर महानगर बन जाता है| महानगर में दो शब्द हैं- महा और नगर| नगर का सामान्य अर्थ 'शहर' है| इस दृष्टि से महानगर का अर्थ होता है 'बडा शहर'| यह एक ऐसा बडा शहर होता है जहां आधुनिकता का बोलबाला होता है | आधुनिकता के नाम यहां पाश्चत्यों की संस्कृति का यहां अधिक असर दिखाई देता हैं| परिणामस्वरूप यहां रहनेवालों को अपनी संस्कृति पिछडी लगने लगती है जिसके चलते मूल्यों का अवमूल्यन होने शुरू होता हैं | ऊपर से महानगर का संबंध गांव की तरह कुछ सीमित समाज के लोगों से नहीं तो विभिन्न समाज, संस्कृति, धर्म, जाति आदि से जुडे लोगों से आता हैं| परिमाणस्वरूप किसी विशिष्ठ समाज के विचारों का पगडा महानगर में नहीं होता, जिसके कारण परिवर्तित संस्कृति के लोग महानगर में मिलते हैं| कुसुम अंसल ने महानगर की परिभाषा कुछ इसी दृष्टि से की है, "महानगर समय की वह प्रतीयमान प्रस्तुति है जो तीव्रता से परिवर्तित होते समाज का एक समूह है| महानगर से बहुत से अर्थ निकलते हैं| वह नगर जो मात्र व्यवस्था का ही केंद्र नहीं होता, वरन् वह महान प्रगति करता हुआ अवयव है जो यदि बहुत भीमकाय हो तो आसपास के सभी छोटे नगरों, गांवों को अपने विस्तार के दौरान लील जाता है|"[1] इस तरह महानगर तीव्रता से परिवर्तित होनेवाले समाज का रूप होता हैं| यह परिवर्तन मूल्यों के विघटन के रूप में भी नजर आ रहा हैं| जिसे मृणाल पांडे ने अपने उपन्यास 'रास्तों पर भटकते लोग' में प्रस्तुत किया हैं|

मृणाल पांडे आधुनिक हिंदी साहित्यकार | उन्होंने आज तक सात उपन्यास लिखे हैं, जैसे –

1) 'विरुद्ध', 2)'अपनी गवाही' 3) 'हमका दियो परदेस', 4) 'रास्तों पर भटकते हुए', 5) 'पटरंगपुर पुराण' 6) 'देवी सहेला रे|

इसमें से 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास महानगरीय जीवन पर आधारित है| प्रस्तुत उपन्यास में दिल्ली महानगर का चित्रण हुआ है|इस उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन में बढती मूल्यहीनता पर प्रकाश डालने से पूर्व मूल्यहिनता पर विचार प्रस्तुत करेंगे |

'मूल्यहीनता' यानी मूल्यों का अनादर करना| 'मूल्य' मानव जीवन को अनुशासन बद्ध करनेवाला सामाजिक सूत्र हैं| इसमें वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तौर पर संपूर्ण मानव जीवन के मानदंड स्थापित होते है, जो समाज हित के मददगार होते है| मूल्यों का महत्व बताते हुए राहुल भारद्वाज लिखते है, "मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करके सामजिक जीवन को वह मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करते है... जो समाज-व्यवस्था संगठन के लिए आवश्यक हैं|"[2] इन मानदंडों का जहां उल्लंघन होता हैं वहां मूल्यहीनता के लिए प्रारंभ होता हैं| महानगर में इन

मानदंडों का सहजता से उल्लंघन होता हैं कारण यहां परिवार जैसी व्यवस्था बिखरी हुई नजर आती हैं| जहां मूल्यों का संस्कार होते हैं| परिमाण स्वरूप महानगर में मूल्यहीनता बढती नजर आ रही| मृणाल पांडे जी ने "रस्ते पर भटकते लोग' इस उपन्यास में इसका यथार्थ चित्रण किया है|

अर्थात महानगर में मूल्य विघटन तीव्र गति से होता नजर आता है| महानगर के मूल्य विघटन पर विचार व्यक्त करते हुए भानुप्रसाद शुक्ल लिखते हैं, "आर्थिक उत्थान और पतन से किसी व्यक्ति का मूल्यांकन जबसे प्रचलित हुआ है, हमारे समाज में मूल्यहीनता बढ़ी है|"[3] महानगर में व्यक्ति का मूल्यांकन अर्थ पर ही होता है| इतना ही नहीं तो यहां संबंध अर्थ पर बनते हैं| परिणामस्वरूप रिश्ते कोई मायाने नहीं रखते हैं| इस पर मृणाल पांडे ने 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में प्रकाश डाला है| उपन्यास की नायिका मंजरी का भाई दिल्ली महानगर में आने के बाद एक बडा व्यावसायिक बन जाता हैं| यहां आने के बाद उसके लिए मां और बहन की तुलना में बीबी का प्रेम महत्वपूर्ण बन जाता हैं | वह यहां तक भूल जाता है कि मुझे बडा उद्योगपति बनाने के लिए मां ने अपने गहने तक बेच दिए है| इतना नहीं तो उसे अपनी मातृभाषा भी तुच्छ लगती है| लेखिका लिखति है, "मातृभाषा के साथ ही वे रिश्ते भी भुरभुराते चले जाते जो एक मां की कोख से निकालनेवालों को बांधते हैं|"[4] इसतरह महानगर में आते ही इन्सान अपने संस्कारों को भूल जाता हैं| यहां रिश्तों में मतलबीपन बढ जाता है| उपन्यास में गणेशन नामक पात्र के माध्यम से इस वास्तविकता पर प्रकाश डाला है| जैसे गणेशन कहता है, "वो भी समझ गया बस्ती का कायदा, दिल्ली का कायदा यहां कोई किसी का नहीं| भगवान का भी नहीं, पितरों का भी नहीं|"[5] अर्थात महानगर में कोई किसी का नहीं होता, महत्वपूर्ण होता है, तो केवल पैसा|

इन पैसों के दम पर ही महानगरी युवकों में फैशन के रूप में अनेक गलत शौक बढ जाते हैं| जिसमें 'पार्टी संस्कृति' के नाम पर शराब पान करना फैशन बन गया हैं| लेखिका लिखति है, "मंजिरी के उद्योगपतिभाई फैशन के नाम पर शराब पान करते है, इस वक्त भी उसके हाथ में गोल्फ की स्टीक है ...इस ओर मुंह करके रखे गये एक कांच के कीमती वाइन ग्लास तक अपनी गोल्फ की गेंद को पहुंचाने का अभ्यास कर रहा है|"[6] केवल शराब ही नहीं तो महानगर के उच्च शिक्षित अफसर, डॉक्टर वेश्या गमन करते नजर आते है| 'एक वचनी एक पत्नी' यह संकृति महानगर में जैसे लुप्त हो रही हैं| परिमाणस्वरूप महानगरीय पति-पत्नी का जीवन तनावपूर्ण बनता जा रहा है| जिसके लिए कारणीभूत महानगर में बढती वेश्या गमन की संस्कृति है| मृणाल पांडे ने इस बदलती संस्कृति पर भी 'रास्ते पर भटकते हुए' उपन्यास में चित्रण किया है| मंजिरी की सास और ससुर के बीच तनावपूर्ण संबंध हैं कारण पति का देर रात तक घर वापस न आना| लेखिका लिखति है, "मुझे अपनी भूतपूर्व सास याद आई थी| वज्र – कठोर पत्नी होते हुए भी थाली धांक कर रात-रातभर उसका वह जागना!फिर देर रात गए का कर्कश कलह और रुदन!"[7] इसतरह मंजिरी की सास देर रात में भी अपने पति के साथ झगडा करती थी|

महानगर में बदलती संस्कृति के कारण रिश्तों में दरारे पड रही है| कारण यहां रिश्तें नहीं तो पैसा महत्वपूर्ण हो गया हैं| अर्थात यहां मतलबी रिश्तें पनप रहे हैं| मंजरी के ससुर ऐसे ही मतलबी व्यक्ति हैं| पेशे से डॉक्टर हैं, पर जब बेटा एक विदेशी लडकी से शादी करना चाहता था तब, पैसों के बलबुते पर मंजिरी जैसे गरीब लडकी से उसकी शादी करते है| और जब बेटा तलाक लेना चाहता है तब पारिवारिक संघर्ष को टालने के लिए मंजिरी को अलग फ्लैट देकर मंजिरी से तलाक लेते है| इसतरह महानगर में स्वार्थमय संस्कृति बढ रही है, जो केवल अपना फायदा देख रही है| जिसके लिए दूसरों के जीवन के साथ खिलवाड करने में भी उन्हें कोई शर्म महसूस नहीं हो रही|

परिणामस्वरूप महानगर की समाज का विभाजन किसी जाती-धर्म पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होता है| अर्थ यानी पैसा| जिसे मनुष्य के जीवन में अनन्य साधारण महत्व है| इसीलिए तो गांव के अनेक लोग महानगर की ओर चल पडते है| यहां आनेवाला इन्सान पैसा कमाने की लालसा से ही आता हैं और अधिक से अधिक धनवान बनने का सपना देखता है| इस कारण महानगरीय जन को धन अधिक से नैतिकता और मानवता में जीवन-है। जाता दिया महत्त्व महानगर के विकास के इस दौड में मनुष्य केवल भागता हुआ नजर आता हैं| कारण यहां मध्यवर्गीय और निम्न वर्गीय लोगों को काम के बिना गुजरा करना असंभव-सी बात है| परिणामस्वरूप यहां का मनुष्य यंत्र बन गया हैं| महानगर के इस यंत्रवत जीवन पर महिपसिंह लिखते हैं, "महानगरों का सबसे बडा संकट यह लगता है कि मनुष्य का धीरे-धीरे अमानवीयकरण होता जा रहा | सभी संबंध खुलकर व्यावसायिक बनते जा रहे है| पूंजीवाद समाज व्यवस्था किस तरह समाज के जीते हुए व्यक्ति को असामाजिक, क्रूर, स्वार्थी, कूटिल और असुरक्षित बनाती हैं| इसका भयावह रूप महानगरों में विशेष रूप से दिखाई देता है|"[8] अर्थात महानगर में अर्थ के कारण इन्सान इन्सान के बीच इतनी दुरियां बढ गयी है कि वह अमानवीय बनता जा रहा है|

उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग की घृणा करते हुए नजर आते है| 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण मिलता है| उपन्यास में सागर पेशीय जवान का चित्रण हैं| दिल्ली के पुनर्जीवन विहार नामक सागर पेशे में छोटे दुकानदार, क्लर्क, चपरासी, जैसे निम्न वर्गीय रहते है| उनका जीवन जीने के लिए संघर्ष करना पडता हैं| उनके नसीब में न अच्छा घर या दो वक्त की रोटी भी नहीं| उसे प्राप्त करने के लिए उन्हें कभी-कभी अवैध काम करते है| कहने के लिए तो उनका पुनर्जीवन है पर प्रत्यक्ष उनका कोई जीवन ही नहीं इसका एहसास मृणाल पांडे जी ने 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में लिखती है, "वैसे न यहां पुनर्जीवन, न जीवन, नहीं विहार| जमुनापारी दिल्ली की दुनिया में उंघते डायनासौर जैसे इलाके और आसपास के आकारों को देखो तो लगता हैं, एक व्यंग्यकार को ठेका दिया गया होगा| इनके काव्यात्मक नाम छांटने का|"[9]

इससे यह स्पष्ट समझ में आता है कि महानगर सामजिक स्थिति में जिसतरह अन्तर है वह पूंजी के कारण इसका परिमाण यह हैं कि महानगर की आर्थिक स्थिति में भी बहुत अन्तर है| महानगर के अमीर और गरीबों के जीवन में जमीन –आसमान का अंतर है| अमीरों के पास इतने पैसे है कि वह छोटे-छोटे समारोह में लाखों-करोडों खर्च करते है| तो वहां गरीब दैनंदिन जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करता है| 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में दिल्ली महानगर की आर्थिक विषमता का चित्रण हुआ हैं| दिल्ली के उच्च वर्गीय लोगों के पास आर्थिक संपन्नता होने के कारण सुख-सुविधाओं की भरमार है तो सागरपेशे में रहनेवाले लोगों की स्थिति आर्थिक विपन्नता की सच्ची दास्तान है| उनके नसीब में रहने के लिए अच्छा घर न दो वक्त की रोटी है| महानगर की इस विडंबनापूर्ण स्थिति के बारे में 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में लेखिका लिखती है, "हमारे देश में पैसेवाले अमीर लोग अपने शरीर को ज्यादा खाकर तबाह करते है, तो बिना पैसेवाले लोग भूख और कुपोषण से सुखाकर|"[10] इसतरह महानगर में आर्थिक विषमता का स्पष्ट रूप नजर आता|

निष्कर्षत

कह सकते है 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में मृणाल पांडे जी ने महानगर में बढती मूल्य हिनता प्रकाश डाला है| जिसके लिए कारणीभूत है –'पैसा'| आर्थिक सुबत्ता के कारण पाश्चत्य संस्कृति का अंधानुकरण हो रहा है| फैशन के नाम पर शराब पीने की संस्कृति बढ रही है| रिश्तों का कोई मूल्य नहीं बचा| तलाक लेना आम बात बन गयी है| अर्थ की दृष्टि से उच्चभ्रू समाज के लोग निम्न समाज के लोगों के साथ अमानवियता का व्यवहार कर रहें है| परिमाणस्वरूप आर्थिक विपन्नता में जीवन जीनेवाले लोगों का जीवन संघर्ष पूर्ण रहता है|

संदर्भ सूची

1. कुसुम अंसल –आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर, पृ. 115
2. राहुल भारद्वाज -नववे दशक की हिंदी कहानी में मूल्य-विघटन, पृ. 91
3. भानुप्रताप शुक्ल- सामाजिक न्याय, पृ. 47
4. मृणाल पांडे - रास्तों पर भटकते हुए, पृ. 72
5. वही, पृ. 13
6. वही, पृ. 10
7. वही, पृ. 37
8. डॉ. कमलेश सचदेव – महिप सिंह का कथा संसार, पृ. 35
9. वही, पृ. 34
10. वही, पृ. 78